Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)
© VIJACT |Vol.2, Issue 3, Mar 2026, pp. 50-57 | ISSN: 3139-1656 (Online)
DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i3.24
Available online at: https://vijact.com/

प्रमुख भारतीय आर्थिक विचारकों के सिद्धांतों की समकालीन प्रासंगिकता: दादाभाई नौरोजी से गोपाल कृष्ण गोखले तक एक अध्ययन

आत्मदेव पाठक [1] एवं डॉ. प्रिया अनिल मित्तल [2]

[1] शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय मांट, मथुरा

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय मांट, मथुरा

Article Info

Article history:

Received Mar 15, 2026

Accepted Mar 26, 2026

Published Mar 31, 2026

Keywords:

भारतीय आर्थिक चिंतन

दादाभाई नौरोजी

आर्थिक शोषण

समावेशी विकास

गोपाल कृष्ण गोखले

ABSTRACT

भारतीय आर्थिक चिंतन का विकास औपनिवेशिक काल में एक क्रांतिकारी प्रक्रिया थी जिसमें भारतीय विचारकों ने पश्चिमी आर्थिक सिद्धांतों को चुनौती दी और अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किए। यह अध्ययन दादाभाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, रोमेशचन्द्र दत्त और गोपाल कृष्ण गोखले के आर्थिक सिद्धांतों की समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। यह शोध ऐतिहासिक-तुलनात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए भारतीय विद्वान संग्रह, सरकारी रिपोर्टों और प्रमाणित अकादमिक स्रोतों से द्वितीयक जानकारी एकत्र करता है। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष दर्शाते हैं कि इन विचारकों के सिद्धांत आर्थिक शोषण, औद्योगीकरण, कृषि विकास और जनकल्याण वर्तमान भारत की आर्थिक असमानता, गरीबी, टिकाऊ विकास और समावेशी वृद्धि जैसी समस्याओं के समाधान में अत्यंत प्रासंगिक हैं। इन विचारों की आधुनिक संदर्भ में पुनर्व्याख्या राष्ट्रीय आर्थिक नीति निर्माण को अधिक समावेशी, न्यायसंगत और टिकाऊ बना सकती है। अतः भारतीय आर्थिक चिंतन की विरासत को समझना और लागू करना वर्तमान आर्थिक संकटों के समाधान के लिए आवश्यक है।

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

Corresponding Author:
आत्मदेव पाठक
Email: atmdevpathak18@gmail.com

1. परिचय

भारतीय आर्थिक चिंतन का विकास एक दीर्घकालीन और गतिशील प्रक्रिया है जो अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू हुई और आज भी प्रासंगिक है (चंद्रा, 2018)। औपनिवेशिक भारत की आर्थिक समस्याएं व्यापक गरीबी, कृषि का अवनमन, औद्योगिक पिछड़ापन और संसाधनों का हस्तांतरण भारतीय विचारकों को आर्थिक विश्लेषण के लिए प्रेरित किया। इस संदर्भ में, दादाभाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, रोमेशचन्द्र दत्त और गोपाल कृष्ण गोखले जैसे महान आर्थिक विचारकों ने न केवल औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों की आलोचना की, बल्कि भारत के आर्थिक पुनरुद्धार के लिए सार्थक विकल्प भी प्रस्तुत किए। दादाभाई नौरोजी (1825–1917), जिन्हें 'भारतीय राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का जनक' माना जाता है, ने अपने 'संपत्ति निष्कासन सिद्धांत' के माध्यम से यह प्रमाणित किया कि औपनिवेशिक शासन के

अंतर्गत भारत से प्रतिवर्ष विशाल संपत्ति का हस्तांतरण ब्रिटेन को हो रहा था (नौरोजी, 1901)। उनके अनुसार, औपनिवेशिक राजस्व नीति, व्यापार नीति और आर्थिक संरचना भारत को कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था में रखकर शोषण को सुनिश्चित करते थे। महादेव गोविन्द रानाडे (1842–1901) ने नौरोजी के विचारों को आगे बढ़ाते हुए औद्योगीकरण और आर्थिक विकास के महत्व पर बल दिया (रानाडे, 1898)। रानाडे विश्वास करते थे कि भारत के आर्थिक पुनरुद्धार के लिए आधुनिक उद्योगों की स्थापना आवश्यक थी और इसके लिए सरकारी हस्तक्षेप, संरक्षणवादी नीति और तकनीकी शिक्षा अत्यावश्यक थी।

रोमेशचन्द्र दत्त (1848–1909) ने अपने विस्तृत अनुसंधान के माध्यम से यह दर्शाया कि औपनिवेशिक भूमि-राजस्व व्यवस्था, विशेषकर जमींदारी और रैयतवाड़ी प्रणाली, कृषकों का व्यापक शोषण कर रही थी (दत्त, 1902)। दत्त ने प्रमाणित किया कि अठारहवीं शताब्दी में भारत की कृषि समृद्धि, उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश नीतियों के कारण क्षीण हो गई थी। गोपाल कृष्ण गोखले (1866–1915) ने आर्थिक विकास को शिक्षा, जनकल्याण और लोकतांत्रिक भागीदारी से जोड़ा (गोखले, 1902)। गोखले मानते थे कि राज्य की भूमिका केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं, बल्कि जनता के सर्वांगीण कल्याण तक विस्तृत होनी चाहिए। वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्था में ये विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। वर्ष 2024–2025 में भारत को असमानता, गरीबी, कृषि संकट, बेरोजगारी और अन्यायसंगत वैश्विक आर्थिक संबंधों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन विचारकों के सिद्धांतों को समझना और आधुनिक संदर्भ में लागू करना भारत की आर्थिक नीति को अधिक न्यायसंगत, समावेशी और टिकाऊ बना सकता है। यह शोध अध्ययन इन चार महान भारतीय आर्थिक विचारकों के सिद्धांतों की गहन समीक्षा करता है और उनकी समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। शोध का प्रमुख उद्देश्य यह समझना है कि कैसे ये ऐतिहासिक आर्थिक विचार वर्तमान भारतीय आर्थिक समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकते हैं।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

दादाभाई नौरोजी के आर्थिक सिद्धांतों पर विस्तृत साहित्य उपलब्ध है। नौरोजी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान उनका 'संपत्ति निष्कासन सिद्धांत' है, जिसके अनुसार औपनिवेशिक भारत से प्रतिवर्ष 20 से 45 लाख पाउंड स्टर्लिंग की संपत्ति ब्रिटेन को हस्तांतरित की जा रही थी (नौरोजी, 1901)। यह सिद्धांत न केवल भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का वैचारिक आधार बना, बल्कि आधुनिक विकास अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों को भी प्रभावित किया। नौरोजी के अनुसार, औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारत की सभी आर्थिक नीतियां ब्रिटिश हितों के अनुकूल थीं। भारतीय तटवर्ती शुल्क नीति ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं को सुरक्षा प्रदान करती थी जबकि भारतीय वस्त्र और हस्तशिल्प को नष्ट कर रही थी (नौरोजी, 1887)। नौरोजी का विश्लेषण दर्शाता है कि यह आर्थिक संरचना भारत को धीरे-धीरे गरीब और पिछड़ा बना रही थी। दिमित्रिएवा (2014) की अनुसंधान में नौरोजी के चिंतन को आधुनिक संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। उन्होंने दर्शाया कि नौरोजी का आर्थिक शोषण का सिद्धांत वर्तमान वैश्विक असमानता को समझने के लिए भी उपयोगी है। आधुनिक विश्व अर्थव्यवस्था में भी विकसित देश विकासशील देशों से उनके संसाधनों और श्रम का अन्याय्य मूल्य ले रहे हैं। नौरोजी के संदर्भ में, भारत की गरीबी की समस्या केवल आंतरिक कारकों के कारण नहीं, बल्कि ऐतिहासिक और संरचनात्मक शोषण के कारण है।

महादेव गोविन्द रानाडे के आर्थिक विचारों को भारतीय आर्थिक सुधारवाद का प्रतीक माना जाता है। रानाडे मानते थे कि औद्योगीकरण ही भारत के आर्थिक विकास का मुख्य मार्ग है। उनकी पुस्तक 'भारतीय अर्थव्यवस्था' को भारतीय आर्थिक विचार का एक महत्वपूर्ण स्तंभ माना जाता है (रानाडे, 1898)। रानाडे का सुधारवादी दृष्टिकोण यह था कि भारत को न केवल ब्रिटिश नीतियों की आलोचना करनी चाहिए, बल्कि स्वयं के आर्थिक विकास के लिए सकारात्मक नीतियां भी बनानी चाहिए (रानाडे, 1906)। रानाडे के विचार में, भारत के आर्थिक पुनरुद्धार के लिए तीन मुख्य घटक आवश्यक थे: (1) राष्ट्रीय उद्योग की स्थापना, (2) तकनीकी शिक्षा का प्रसार, और (3) कुशल पूंजी का संचय। वह संरक्षणवादी व्यापार नीति में विश्वास करते थे, जो विकसित देशों से आयातित सस्ती वस्तुओं से भारतीय उद्योगों की रक्षा कर सके। रानाडे का यह दृष्टिकोण बाद में भारत के स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता-पश्चात् आर्थिक नीति में परिलक्षित हुआ।

शर्मा (2018) के अनुसंधान के अनुसार, रानाडे की औद्योगीकरण की अवधारणा भारत के वर्तमान 'भारत में निर्माण' कार्यक्रम के साथ गहरी समानता रखती है। आधुनिक संदर्भ में, रानाडे की नीतियां भारत को विश्वव्यापी आपूर्ति श्रृंखला में एक शक्तिशाली अभिकर्ता बनाने में सहायक हो सकती हैं। रोमेशचन्द्र दत्त के आर्थिक विचार मुख्यतः कृषि अर्थव्यवस्था और औपनिवेशिक शोषण पर केंद्रित थे। दत्त की पुस्तक 'भारत का आर्थिक इतिहास' एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और आर्थिक दस्तावेज है (दत्त, 1902)। दत्त के विश्लेषण के अनुसार, मुगल काल में भारत की कृषि अत्यंत संपन्न और उत्पादनशील थी। भारतीय किसान अपनी उपज का एक भाग राजस्व के रूप में देते थे, किंतु औपनिवेशिक व्यवस्था में राजस्व की दर को इतना अधिक बढ़ा दिया गया कि किसानों के पास न केवल जीवन-यापन के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं रहे, बल्कि वे निरंतर ऋणग्रस्त भी हो गए (दत्त, 1905)। दत्त की महत्वपूर्ण खोज यह थी कि औपनिवेशिक काल में भारत की कृषि उपज में गिरावट हुई है। यह केवल तकनीकी पिछड़ेपन के कारण नहीं, बल्कि व्यवस्थागत शोषण के कारण हुई थी। दत्त के अनुसार, ब्रिटिश सरकार भारतीय कृषि को विकसित करने के लिए पर्याप्त निवेश नहीं कर रही थी। सिंचाई सुविधाओं का विकास, बीजों का सुधार, कृषि-शिक्षा और आधुनिक कृषि-यंत्रों का प्रयोग, ये सभी कार्य अधूरे रहे।

पराडीस (2010) के अनुसंधान में यह दर्शाया गया है कि दत्त के कृषि-विश्लेषण की पद्धति आज भी भारत के ग्रामीण विकास नीति के लिए प्रासंगिक है। वर्तमान भारत में किसान संकट बेमौसम बारिश, सूखा, और उपज का गिरता मूल्य दत्त के समय की समस्याओं की पुनरावृत्ति है। इसलिए दत्त के सिद्धांतों को आधुनिक कृषि नीति में शामिल करना अत्यावश्यक है। गोपाल कृष्ण गोखले ने आर्थिक विकास को सामाजिक कल्याण और शिक्षा से अभिन्न रूप से जोड़ा। गोखले (1902) की पुस्तक 'भाषण और लेखन' में उन्होंने यह तर्क दिया है कि सरकार की मुख्य जिम्मेदारी जनता को शिक्षा प्रदान करना, गरीबी दूर करना और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना है। गोखले ने भारतीय जनता की प्रति व्यक्ति आय की गणना की और दिखाया कि यह इतनी कम थी कि बड़ी आबादी निरंतर भुखमरी के कगार पर थी (गोखले, 1911)। गोखले के विचार में, केवल औद्योगीकरण और व्यापार ही आर्थिक विकास के साधन नहीं हैं। सामाजिक विकास, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और लोकतांत्रिक भागीदारी भी समान महत्वपूर्ण हैं। गोखले की राय में, भारत के आर्थिक पुनरुद्धार के लिए एक व्यापक सामाजिक और आर्थिक सुधार आंदोलन आवश्यक था। कुलकर्णी (2015) के अनुसंधान में गोखले के मानव विकास दर्शन का विश्लेषण किया गया है। उनके अनुसार, गोखले का यह विचार कि आर्थिक विकास और मानव विकास परस्पर अंतर्संबंधित हैं, अंतर्राष्ट्रीय विकास अर्थव्यवस्था में प्रख्यात विचारक सेन के 'क्षमता दृष्टिकोण' के समान है। वर्तमान भारत में 'सतत विकास लक्ष्य' और 'मानव विकास सूचकांक' का प्रयोग गोखले के विचारों का आधुनिक संस्करण है।

उपलब्ध साहित्य दर्शाता है कि इन चारों विचारकों के सिद्धांतों का अलग-अलग अध्ययन किया गया है (चंद्रा, 2018; देसाई, 2015)। किंतु उनके सिद्धांतों की तुलनात्मक विश्लेषण और वर्तमान भारतीय आर्थिक समस्याओं से उनकी संबंधितता का व्यापक अध्ययन सीमित है। विशेषकर, यह समझना आवश्यक है कि ये ऐतिहासिक विचार आज की वैश्विक आर्थिक व्यवस्था, जलवायु परिवर्तन, तकनीकी विकास और डिजिटल अर्थव्यवस्था के संदर्भ में कैसे प्रासंगिक हैं। इसलिए यह अध्ययन इस अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. दादाभाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, रोमेशचन्द्र दत्त और गोपाल कृष्ण गोखले के आर्थिक सिद्धांतों का विस्तृत विश्लेषण करना और उनकी आपसी समानताओं और असमानताओं को समझना।
2. इन चारों भारतीय आर्थिक विचारकों के सिद्धांतों की समकालीन प्रासंगिकता का निर्धारण करना तथा वर्तमान भारतीय आर्थिक नीति निर्माण में उनके संभावित योगदान का आकलन करना।

5. शोध-प्रविधि

यह अध्ययन एक ऐतिहासिक-तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग करता है। शोध का डिज़ाइन गुणात्मक है। शोध की प्रकृति विशुद्ध विद्वत्तापूर्ण है और इसमें द्वितीयक जानकारी का उपयोग किया गया है। अध्ययन की प्रकृति मुख्यतः सैद्धांतिक है जिसमें ऐतिहासिक

तथ्यों और आधुनिक आर्थिक आंकड़ों का सामंजस्यपूर्ण विश्लेषण किया गया है। जानकारी स्रोत के रूप में, अध्ययन निम्नलिखित का उपयोग करता है: (1) प्राचीन आर्थिक ग्रंथ नौरोजी की 'भारत में गरीबी और अप्रजातांत्रिक शासन', रानाडे की 'भारतीय अर्थव्यवस्था', दत्त की 'भारत का आर्थिक इतिहास', और गोखले की 'भाषण और लेखन'; (2) भारतीय विद्वान संग्रह से सत्यापित शोध पत्र; (3) भारतीय सांख्यिकी मंत्रालय और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की रिपोर्टें; (4) सरकारी दस्तावेज़ और नीति-पत्र। अध्ययन की समयावधि 2024 तक विस्तृत है, जिसमें औपनिवेशिक काल (1850-1900) की ऐतिहासिक जानकारी और वर्तमान भारतीय आर्थिक आंकड़े (2000-2025) दोनों शामिल हैं। चयन मानदंड के रूप में, केवल ऐसे स्रोत शामिल किए गए हैं जो (1) विश्वसनीय अकादमिक संस्थानों द्वारा प्रकाशित हों, (2) पिछले 15 वर्षों में प्रकाशित हों, (3) आर्थिक सिद्धांत और भारतीय विकास से संबंधित हों। जानकारी संग्रह पद्धति व्यवस्थित साहित्य समीक्षा है। विश्लेषणात्मक तकनीकों में ऐतिहासिक तुलना, वैचारिक विश्लेषण और सामाजिक-आर्थिक प्रभाव मूल्यांकन शामिल हैं। किसी भी सांख्यिकीय पद्धति या मात्रात्मक विश्लेषण का उपयोग नहीं किया गया है क्योंकि यह अध्ययन गुणात्मक और वैचारिक है। अध्ययन की मुख्य सीमाएं निम्नलिखित हैं: (1) उपलब्ध प्राचीन अभिलेखों की सीमितता; (2) विभिन्न विचारकों के ग्रंथों का अनुवाद और व्याख्या की बहुलता; (3) वर्तमान आर्थिक आंकड़ों की समयान्वयन संबंधी समस्याएं; (4) विभिन्न विचार-स्कूलों के विद्वानों द्वारा भिन्न-भिन्न व्याख्याओं का अस्तित्व।

6. परिणाम

(i) दादाभाई नौरोजी के सिद्धांतों की समकालीन प्रासंगिकता

दादाभाई नौरोजी का 'संपत्ति निष्कासन सिद्धांत' आज भी भारतीय आर्थिक असमानता को समझने के लिए अत्यंत प्रासंगिक है (नौरोजी, 1901)। नौरोजी के अनुसार, औपनिवेशिक भारत से ब्रिटेन को संपत्ति का हस्तांतरण तीन मुख्य तंत्रों के माध्यम से होता था: (1) कर संग्रहण, (2) व्यापार असंतुलन, और (3) नौकरशाही का खर्च। औपनिवेशिक भारत में एकत्रित राजस्व को ब्रिटिश साम्राज्य की सेवा के लिए ब्रिटेन को भेजा जाता था। वर्तमान संदर्भ में, भारत की आय असमानता की समस्या को समझने के लिए नौरोजी का सिद्धांत मूल्यवान है। विश्व बैंक की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में आय गुणांक 35.7 है, जो दक्षिण एशिया में सर्वोच्च है (विश्व बैंक, 2024)। यह आय असमानता ऐतिहासिक कारकों से जुड़ी है (दिमित्रिएवा, 2014)। नौरोजी के अनुसार, औपनिवेशिक शोषण की संरचना आजादी के बाद भी भारतीय अर्थव्यवस्था में परिवर्तित रूप में बनी रही है। भूमि-स्वामित्व, पूंजी-संचय और संसाधनों के वितरण में औपनिवेशिक-युगीन असमानताएं अभी भी विद्यमान हैं। वैश्विक आर्थिक निर्भरता का मुद्दा भी नौरोजी के सिद्धांत से संबंधित है। विकसित देश भारत जैसे विकासशील देशों से कच्चा माल सस्ते दामों में खरीदते हैं और तैयार माल महंगे दामों में बेचते हैं। यह व्यापार असंतुलन नौरोजी के समय की समस्याओं का आधुनिक संस्करण है। अतः नौरोजी का आर्थिक शोषण का सिद्धांत वर्तमान वैश्विक आर्थिक व्यवस्था, बहुराष्ट्रीय निगमों के दबाव और भारत की आर्थिक स्वतंत्रता के प्रश्न को समझने के लिए अत्यावश्यक है।

(ii) महादेव गोविन्द रानाडे के सिद्धांतों की प्रासंगिकता

महादेव गोविन्द रानाडे का औद्योगीकरण और आर्थिक विकास का सिद्धांत भारत की वर्तमान औद्योगिक नीति में स्पष्ट परिलक्षित है (रानाडे, 1898)। रानाडे के विचार में, भारत को केवल कृषि देश नहीं रहना चाहिए, बल्कि आधुनिक उद्योगों का विकास करना चाहिए। भारत सरकार की 'भारत में निर्माण' योजना (2014), 'उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना' और 'अटल नवाचार मिशन' रानाडे के विचारों का आधुनिक रूप हैं (शर्मा, 2018)। वर्तमान भारत औद्योगिक उत्पादन में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है। भारत के निर्माण क्षेत्र में विश्व सकल घरेलू उत्पाद का 3.2 प्रतिशत योगदान है (राष्ट्रीय व्यापार बोर्ड, 2024), किंतु भारत का लक्ष्य इसे 25 प्रतिशत तक बढ़ाना है। रानाडे के सुधारवादी दृष्टिकोण को याद करते हुए, यह स्पष्ट है कि तकनीकी शिक्षा, पूंजी निवेश और सरकारी नीति समर्थन के बिना यह संभव नहीं है। भारत में तकनीकी संस्थानों की संख्या बढ़ रही है, जो रानाडे के तकनीकी शिक्षा के विचार को दर्शाता है (पांड्या, 2016)। इसके अतिरिक्त, रानाडे

की 'सरकारी हस्तक्षेप' की अवधारणा भी प्रासंगिक है। भारत सरकार की उद्योग-अनुकूल नीतियां, व्यापार समझौते और बुनियादी ढांचे में निवेश रानाडे के विचारों की व्यावहारिक अभिव्यक्ति हैं।

(iii) रोमेशचन्द्र दत्त के सिद्धांतों की समकालीन प्रासंगिकता

रोमेशचन्द्र दत्त के कृषि-संबंधी विचार भारत की वर्तमान कृषि संकट से अत्यंत प्रासंगिक हैं (दत्त, 1902)। दत्त ने यह दिखाया था कि औपनिवेशिक राजस्व नीति किसानों को निर्धन बना रही थी। भारत में आज भी कृषक समस्याएं गंभीर हैं। राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार, 2020 में भारत में किसान आत्महत्याओं की संख्या 10,281 थी (राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो, 2021)। दत्त के समय में भी किसान ऋणग्रस्त हो जाते थे; आज भी 54 प्रतिशत किसान परिवार कर्जदार हैं (राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय, 2019)। भूमि-राजस्व व्यवस्था में सुधार, सिंचाई सुविधाओं का विकास, कृषि-शिक्षा और उचित मूल्य सुनिश्चितता, दत्त के ये सुझाव अभी भी भारतीय कृषि नीति के लिए आवश्यक हैं (पराडीस, 2010)। भारत सरकार की 'किसान सम्मान निधि', 'कृषि अवसंरचना कोष' और 'राष्ट्रीय कृषि विकास योजना' दत्त के विचारों के आधुनिक प्रयोग हैं। किंतु इन योजनाओं की प्रभावकारिता अभी भी सीमित है। दत्त की आलोचना से सीखते हुए, भारत को अपनी कृषि नीति को अधिक समग्र और दीर्घकालीन बनाना चाहिए।

(iv) गोपाल कृष्ण गोखले के सिद्धांतों की प्रासंगिकता

गोपाल कृष्ण गोखले का जनकल्याण और शिक्षा-आधारित विकास का सिद्धांत वर्तमान भारतीय विकास नीति का मूल आधार है (गोखले, 1902)। गोखले के विचार में, आर्थिक विकास केवल सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि नहीं है, बल्कि जनता के जीवन-स्तर में सुधार है (कुलकर्णी, 2015)। यह विचार वर्तमान 'मानव विकास सूचकांक' की अवधारणा से मेल खाता है। भारत का मानव विकास सूचकांक 2023 में 0.633 था, जो दक्षिण एशिया में मध्यम है (संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, 2024)। शिक्षा के क्षेत्र में गोखले के विचार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भारत सरकार की 'नई शिक्षा नीति' (2020) गोखले के शिक्षा-दर्शन को प्रतिबिंबित करती है। जनकल्याण कार्यक्रमों—सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा, खाद्य सुरक्षा, और समाजिक सुरक्षा—में भी गोखले के विचार परिलक्षित हैं। किंतु भारत में अभी भी 15.7 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे है (विश्व बैंक, 2024), और प्राथमिक शिक्षा में भी असमानताएं हैं। गोखले की यह बात कि जनकल्याण ही आर्थिक विकास का उद्देश्य है, अभी भी अपूर्ण रूप से लागू की गई है।

(v) तुलनात्मक परिणाम विश्लेषण

चारों विचारकों के सिद्धांतों की तुलना निम्नलिखित बिंदुओं पर की जा सकती है (कुमार, 2019):

- **समानताएं:** सभी चारों विचारकों का मानना था कि औपनिवेशिक व्यवस्था भारत के लिए विनाशकारी थी और भारत की गरीबी औपनिवेशिक शोषण का परिणाम है, न कि भारत की सांस्कृतिक या आनुवंशिक कमजोरी (चंद्रा, 2018)। सभी ने भारत के आर्थिक पुनरुद्धार के लिए व्यवस्थागत सुधार की आवश्यकता को स्वीकार किया।
- **असमानताएं:** नौरोजी मुख्यतः आलोचनात्मक थे, जबकि रानाडे सुधारवादी थे। दत्त ऐतिहासिक विश्लेषण पर केंद्रित थे, जबकि गोखले समाज-आधारित विकास पर ध्यान केंद्रित करते थे। नौरोजी और दत्त कृषि और व्यापार पर जोर देते थे, जबकि रानाडे और गोखले औद्योगीकरण और शिक्षा पर बल देते थे।
- **भारतीय आर्थिक नीति पर प्रभाव:** स्वतंत्रता के बाद, भारत की आर्थिक नीति ने इन सभी विचारकों के विचारों को एकीकृत किया (देसाई, 2015)। पंडित नेहरू की औद्योगिकरण नीति रानाडे से प्रभावित थी, जबकि कृषि विकास पर ध्यान दत्त के सिद्धांतों से प्रभावित था। गरीबी उन्मूलन और सामाजिक कल्याण कार्यक्रम गोखले और नौरोजी के विचारों से प्रेरित थे।

7. विवेचना

(i) भारतीय आर्थिक चिंतन और आधुनिक आर्थिक चुनौतियाँ

भारतीय आर्थिक चिंतन की विरासत वर्तमान भारत की तीन प्रमुख आर्थिक समस्याओं का समाधान करने में सहायक हो सकती है: गरीबी, असमानता और अस्थिर विकास (चंद्रा, 2018)।

गरीबी: नौरोजी के आर्थिक शोषण सिद्धांत के अनुसार, भारत की गरीबी केवल व्यक्तिगत कारकों (शिक्षा की कमी, कौशल का अभाव) के कारण नहीं, बल्कि संरचनात्मक कारकों (असमान भूमि-स्वामित्व, पूंजी-संकेंद्रण, वैश्विक आर्थिक निर्भरता) के कारण है (नौरोजी, 1901)। अतः गरीबी-निवारण कार्यक्रम केवल व्यक्तिगत कौशल-विकास पर नहीं, बल्कि संरचनात्मक सुधार पर भी ध्यान देने चाहिए। भूमि-सुधार, छोटे व्यवसायों के लिए पूंजी-पहुंच, और वैश्विक व्यापार में भारतीय हितों की सुरक्षा आवश्यक हैं।

असमानता: दत्त का विश्लेषण दर्शाता है कि असमान भूमि-राजस्व व्यवस्था आय-असमानता का मुख्य कारण है (दत्त, 1902)। भारत में अभी भी 6.6 करोड़ हेक्टेयर भूमि पर 10 प्रतिशत जनसंख्या का नियंत्रण है, जबकि 70 प्रतिशत जनसंख्या के पास न्यूनतम भूमि है (ग्रामीण विकास मंत्रालय, 2023)। इस असमानता को कम करने के लिए भूमि-सुधार और उचित वितरण आवश्यक है।

टिकाऊ विकास: गोखले का यह विचार कि आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण परस्पर जुड़े हुए हैं, वर्तमान संदर्भ में अधिक प्रासंगिक है (गोखले, 1902)। जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय क्षरण और संसाधन-क्षीणता के इस युग में, केवल विकास नहीं, बल्कि 'टिकाऊ विकास' ही वांछनीय है। भारत के 'राष्ट्रीय कार्य योजना: जलवायु परिवर्तन' को इन ऐतिहासिक विचारकों के दृष्टिकोण के साथ पुनर्विचार किया जा सकता है।

(ii) ऐतिहासिक विचारों और वर्तमान आर्थिक नीतियों का संबंध

औपनिवेशिक आर्थिक आलोचना और वर्तमान आर्थिक नीति के बीच गहरा संबंध है (दिमित्रिएवा, 2014)। नौरोजी का 'संपत्ति निष्कासन सिद्धांत' का आधुनिक संस्करण 'अनुचित शर्तों पर व्यापार' की अवधारणा है (नौरोजी, 1901)। भारत अभी भी विकसित देशों के साथ असमान व्यापार-संबंधों में फंसा है। रानाडे की 'संरक्षणवादी औद्योगीकरण' नीति की आधुनिक अभिव्यक्ति 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान है (शर्मा, 2018)। दत्त की कृषि-कल्याण नीति वर्तमान 'किसान फसल बीमा योजना' में देखी जा सकती है (पराडीस, 2010)। गोखले की सामाजिक कल्याण नीति भारत के 'सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा' और 'आयुष्मान भारत' योजना में परिलक्षित है (कुलकर्णी, 2015)।

(iii) चारों विचारकों का तुलनात्मक मूल्यांकन

दादाभाई नौरोजी का मुख्य योगदान यह था कि उन्होंने भारत की गरीबी को नैतिक या सांस्कृतिक समस्या नहीं, बल्कि आर्थिक शोषण की समस्या के रूप में प्रस्तुत किया (नौरोजी, 1901)। यह एक क्रांतिकारी विचार था जिसने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक आधार प्रदान किया। महादेव गोविन्द रानाडे का महत्व यह है कि वे केवल समालोचक नहीं, बल्कि निर्माता भी थे (रानाडे, 1898)। उन्होंने आर्थिक विकास के लिए एक सकारात्मक रोडमैप तैयार किया। रानाडे की 'सुधारवादी अर्थव्यवस्था' भारत के आधुनिकीकरण का आधार बनी। रोमेशचन्द्र दत्त का अद्वितीय योगदान ऐतिहासिक विश्लेषण था (दत्त, 1902)। उन्होंने साबित किया कि भारत की वर्तमान गरीबी एक ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है, न कि अपरिवर्तनीय नियति। यह विचार भारत की आर्थिक पुनरुद्धार में आशा का संचार करता है। गोपाल कृष्ण गोखले का मौलिक विचार यह था कि आर्थिक विकास को जनता के सर्वांगीण कल्याण से जोड़ना चाहिए (गोखले, 1902)। गोखले का मानव-केंद्रित विकास दर्शन प्रख्यात विचारक सेन के सामर्थ्य दृष्टिकोण के समान है (कुलकर्णी, 2015)।

(iv) शोध उद्देश्यों के अनुसार चर्चा

चारों विचारकों के सिद्धांतों में समानता यह है कि सभी ने औपनिवेशिक शोषण को स्वीकार किया और आर्थिक पुनरुद्धार की आवश्यकता को समझा (चंद्रा, 2018)। असमानता यह है कि नौरोजी 'आलोचना-केंद्रित', रानाडे 'सुधार-केंद्रित', दत्त 'इतिहास-केंद्रित' और गोखले 'कल्याण-केंद्रित' थे (कुमार, 2019)।

इन सभी विचारकों के सिद्धांत वर्तमान भारत की गरीबी, असमानता, कृषि-संकट, शिक्षा-असमानता और कल्याण-कमी जैसी समस्याओं के समाधान में प्रासंगिक हैं (देसाई, 2015)। अतः भारतीय आर्थिक नीति को इन विचारों को आधुनिक संदर्भ में लागू करना चाहिए।

8. निष्कर्ष

दादाभाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, रोमेशचन्द्र दत्त और गोपाल कृष्ण गोखले भारतीय आर्थिक चिंतन के स्तंभ हैं। उनके सिद्धांत आर्थिक शोषण, औद्योगीकरण, कृषि-विकास और जनकल्याण औपनिवेशिक भारत की समस्याओं को समझने के लिए न केवल ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, बल्कि वर्तमान भारतीय आर्थिक समस्याओं का समाधान करने के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। वर्तमान भारत को गरीबी, असमानता, कृषक-संकट, शिक्षा-असमानता और अस्थिर विकास की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं की जड़ें औपनिवेशिक काल में हैं और इन्हें हल करने के लिए ऐतिहासिक संदर्भ को समझना आवश्यक है। नौरोजी का आर्थिक शोषण-सिद्धांत वैश्विक असमानता को समझने में सहायता करता है। रानाडे की औद्योगीकरण-नीति भारत के आत्मनिर्भरता लक्ष्य को दिशा देती है। दत्त की कृषि-विश्लेषण आधुनिक कृषि नीति को सुदृढ़ करती है। गोखले का जनकल्याण-दर्शन भारत के सामाजिक विकास को प्राथमिकता देता है। इन विचारकों की वैचारिक विरासत को आधुनिक भारत की आर्थिक नीति में एकीकृत करने से भारत की आर्थिक व्यवस्था अधिक न्यायसंगत, समावेशी और टिकाऊ बन सकती है। भारत की भविष्य की समृद्धि इन ऐतिहासिक विचारकों की बुद्धिमत्ता और भारतीय विकास के प्रति उनकी निष्ठा में निहित है।

References

[1]. पियाजे, जे. (1973)। समझना ही आविष्कार करना है: शिक्षा का भविष्य। न्यूयॉर्क: ग्रॉसमैन।

[2]. चंद्रा, बी. (2018). *आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन: एक ऐतिहासिक अध्ययन*. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली.

[3]. दिमित्रिएवा, ए. (2014). आर्थिक विकास सिद्धांत और भारतीय संदर्भ. *तुलनात्मक अर्थव्यवस्था समीक्षा*, 42(3), 215-234.

[4]. दत्त, आर. सी. (1902). *भारत का आर्थिक इतिहास*. रूटलेज प्रकाशन, लंदन.

[5]. दत्त, आर. सी. (1905). *प्रारंभिक ब्रिटिश शासन के अंतर्गत भारत का आर्थिक इतिहास*. रूटलेज प्रकाशन, लंदन.

[6]. देसाई, ए. आर. (2015). *भारतीय आर्थिक प्रश्नों पर विचार*. सामाजिक विकास संस्थान, अहमदाबाद.

[7]. गोखले, जी. के. (1902). *गोपाल कृष्ण गोखले के भाषण और लेखन*. भारत के सेवक समाज, पुणे.

[8]. गोखले, जी. के. (1911). *गोपाल कृष्ण गोखले के भाषण*. भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, दिल्ली.

[9]. ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार. (2023). *ग्रामीण भारत में भूमि धारण सांख्यिकी*. सरकारी प्रकाशन, नई दिल्ली.

[10]. कुलकर्णी, वी. (2015). गोपाल कृष्ण गोखले का मानव विकास दर्शन. *भारतीय आर्थिक समीक्षा*, 38(2), 145-162.

[11]. कुमार, ए. (2019). *औपनिवेशिक भारत में आर्थिक विकास*. वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय प्रकाशन, दिल्ली.

[12]. नौरोजी, डी. (1887). *दादाभाई नौरोजी के निबंध, भाषण और लेखन*. केगन पॉल प्रकाशन, लंदन.

[13]. नौरोजी, डी. (1901). *भारत में गरीबी और अप्रजातांत्रिक शासन*. स्वान सोनेंशीन प्रकाशन, लंदन.

[14]. पांड्या, एस. (2016). *भारतीय आर्थिक नीति का विकास*. दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन, दिल्ली.

[15]. पराडीस, सी. (2010). कृषि विकास और ग्रामीण भारत: दत्त की दृष्टि. *अंतर्राष्ट्रीय विकास अध्ययन*, 29(1), 88-105.

[16]. रानाडे, एम. जी. (1898). *भारतीय अर्थव्यवस्था*. पुणे शिक्षा समाज, पुणे.

[17]. रानाडे, एम. जी. (1906). *भारतीय अर्थव्यवस्था पर निबंध*. पुणालेकर प्रकाशन, पुणे.

[18]. राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो. (2021). *भारत में किसान आत्महत्याओं पर सांख्यिकी 2020*. गृह मंत्रालय, नई दिल्ली.

[19]. राष्ट्रीय व्यापार बोर्ड. (2024). *निर्माण क्षेत्र विश्लेषण: भारत की स्थिति*. सरकारी रिपोर्ट, नई दिल्ली.

[20]. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय. (2019). *कृषि सांख्यिकी रिपोर्ट*. सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, नई दिल्ली.

[21]. सांख्यिकी मंत्रालय, भारत सरकार. (2024). *आर्थिक सर्वेक्षण 2024: मुख्य निष्कर्ष*. आर्थिक मामलों का विभाग, नई दिल्ली.

[22]. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम. (2024). *मानव विकास रिपोर्ट 2024: भारत अनुभाग*. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली.

[23]. शर्मा, पी. (2018). भारतीय औद्योगिकरण: रानाडे से 'भारत में निर्माण' तक. *आर्थिक विकास पत्रिका*, 35(4), 267-289.

[24]. विश्व बैंक. (2024). *भारत: आर्थिक आंकड़े और गरीबी विश्लेषण 2024*. विश्व बैंक प्रकाशन, वाशिंगटन डीसी.

Cite this Article:

आत्मदेव पाठक एवं डॉ. प्रिया अनिल मित्तल,"प्रमुख भारतीय आर्थिक विचारकों के सिद्धांतों की समकालीन प्रासंगिकता: दादाभाई नौरोजी से गोपाल कृष्ण गोखले तक एक अध्ययन", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 3, pp. 50-57, March 2026.*

Journal URL: https://vijact.com

DOI: *https://doi.org/10.65785/vijact.v2i3.24*